[श्री केदार पांडे]

1308 लाख कर दिया गया है । इसी तरह से उत्तर प्रदेश के लिए 1-4-1979 के पहले 218 लाख रुपया था, उस को अब 1080 लाख कर दिया है। इसलिये जो भी रिलीफ आपरेशन्ज हो सकते हैं, उन को किया जा रहा है ।

हमें यह बात याद रहती है—श्रीमती इन्दिरा गांधी हमारे बिहार के उस छोर पर गई थी, जहां पर बाढ़ आई हुई थी, जिसे धनहा, मधुबनी, ठकरहा क्षेत्र कहते हैं। वहां पर जाकर उन्होंने स्वयं देखा था और उसमें जनता को बहुत सन्तोष हुआ था। वहां पर हमने बांध बनाना शुरू किया था, जिस को बिहार-बंध कहते हैं, उस में कुछ समय लगा । अभी हाल ही में हमने कुछ ऐसे कदम उठाये हैं कि उस बांध को और मजबूत किया जाये ताकि वह टूटने न पाये और उसका पानी देवरिया जिले की तरफ न जाय ।

इसी तरह से कुछ और बातें हैं जो सब के लिए कामन हैं और केन्द्रीय सरकार की तरफ से जो योजनायें उनके लिये बनाई गई हैं, उन पर काम होगा । लेकिन मैं एक बात अवश्य कहना चाहता हूं—आप अपनी-अपनी स्टेट्स से कमेन्टस जल्दी भिजवायें । राष्ट्रीय बाढ़ आयोग द्वारा जो रिपोर्ट उनको भेजी गई है, अभी तक कमेन्ट्स नहीं आये हैं। उत्तर प्रदेश की तरफ से भी कमेन्ट्स नहीं आये हैं। कमेन्ट्स आने के बाद मैं हर प्रान्त के माननीय सदस्यों को बुला कर उनसे बात करूंगा और बात करने के बाद उन की राय के मुताबिक क्या स्टेप्स लिये जा सकते हैं, उन पर काम करूंगा ।

एक बात मैं नैपाल के बारे में कहना चाहता हूं । मैंने पहले भी कहा है कि जो नदियां नैपाल से आती हैं, जैसे राप्ती, गंगा, कोसी गण्डक या दूसरी नदियां हैं, जब तक उन पर रिजरवायर नहीं बनेगा, काम नहीं होगा। इसलिये हमारी तरफ से नैपाल सरकार के साथ सम्पर्क किया गया है, हो सकता है जल्दी ही हम लोग इस काम को शुरू करें । यह वास्तव में बेसिक प्राबलम है, जब तक वहां रिजरवायर नहीं बनेगा, उत्तर प्रदेश और बिहार दोनों के हालात खराब ही रहेंगे । इसलिये वहां रिजरवायर बनने जरूरी है ।

13.30 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) Reported fall in production in Heavy Engineering Corporation, Ranchi.

SHRI RAMSWAROOP RAM (Gaya): Sir, I rise to make a statement regarding the chaotic situation prevailing in Heavy Engineering Corporation Ltd., Ranchi, for quite some time resulting in heavy loss in production. The HEC reached a peak performance in 1976-77 when the annual production totalled Rs. 112.20 crores. During the years following the production has continuously slumped and the Corporation suffered a loss of Rs. 35 crores in 1977-78, Rs. 30 crores in 1978-79 and Rs. 33 crores up to January, 1980. While inefficiency is the sole reason for this miserable performance of HEC, the management has come up with the alibi of power shortage. A discreet study of the problem of power shortage was conducted by Hatia Project Workers' Union and it was revealed that the total loss of production on this account for the whole year hardly worked out to Rs. 2 crores. The loss suffered during the last three years surpasses the loss incurred during the preceding 15 years. The following steps are, therefore, immediately needed to set the affairs of HEC in proper order:—

(1) Change in the top management of the Corporation.

(2) Setting up of a high level committee with representatives of labour to study and make a thorough probe into the various failure of HEC and to suggest remedial measures.

(3) Regular and uninterrupted power supply for the projects.